IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय लोकगीतों में स्त्रियों के मनोभावों की अभिव्यक्ति

डॉ. वंदना, विद्यालय अध्यापक, मुस्तफापुर, बिभूतिपुर, समस्तीपुर, बिहार

सारांश - भारत में वर्ण भेद के आधार पर विभाजित समाज का सांस्कृतिक विकास भी अलग-अलग तरह से हुआ है। भारत में विभिन्न मतों के लोग रहते हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन, नाथ संप्रदाय, सभी संप्रदायों में अलग-अलग अवसरों पर संगीत का प्रयोग किया जाता है। इस संसार में जहां-जहां भी साहित्य मिलता है उसमें स्त्री की दो ही दशाओं का वर्णन होता है या तो सुखी या दुखी। या तो स्त्री अपनी आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक संबंधों में सुख का अनुभव करती है अथवा आर्थिक स्थिति से परेशान एवं पारिवारिक संबंधों से परेशान रहती है। लेकिन स्त्री की यह खूबी है कि चाहे वह अंदर से सुखी हो या दुखी वह प्रत्येक से संवाद कायम कर सकती है तथा दूसरे के सुख और दुख में सहभागी भी हो सकती है। साहित्य में या संगीत में स्त्री के इसी रूप का वर्णन किया गया है। इन रिश्तों में मां-बेटी, सास-बहू, ननद-भौजाई, देवर-भाभी, मां-बेटा, पति-पत्नी इन सभी रूपों में स्त्री अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है तथा इन्हीं सब रिश्तो में गूंथे हुए होते हैं हमारे लोकगीत। पुत्री का जन्म हो या बेटी की विदाई, ननद की शादी हो या घर में देवर की शादी सभी मौकों पर उसकी एक विशेष भूमिका लोकगीतों में वर्णित की गई है। दूसरी पीढ़ी में देखें तो नानी, मामी, चाची, बुआ, दादी इन सभी रूपों में स्त्री का एक विशेष सम्मान एवं महत्व होता है। स्त्री के हृदय में छिपे हुए भावों का विशेषकर इन लोकगीतों में वर्णन होता है जिन्हें वह साधारण बातचीत में तो व्यक्त नहीं कर पाती किंतु लोकगीत में वे अनायास ही व्यक्त हो जाते हैं।

संकेताक्षर- लोकगीत, स्त्री की दशा, पारिवारिक संबंधों की प्रगाढ़ता, लोकगीतों में स्त्री की भूमिका

शोध विधि - प्रस्तुत शोध-पत्र कार्य को पूरा करने के लिए उपलब्ध एवं प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट एवं निम्नलिखित स्रोतों से भी शोध विषयक सामग्री प्राप्त कर शोध-पत्र को प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

1. पुस्तक एवं पत्रिकाएं 2.डिजिटल मीडिया 3.निरीक्षण तकनीक 4.शोध-पत्र

प्रस्तावना - शब्दकोष में लोक का अर्थ है जगत, संसार, लोग। यहां पर ग्राम या शहर का कोई अंतर दिखाई नहीं देता है। इस संसार में रहने वाले सभी मनुष्यों के लिए भी लोक शब्द ही प्रयुक्त किया जाता है। संगीत का अर्थ पुस्तकों में इस प्रकार वर्णित है। गायन, वादन और नृत्य तीनों को मिलाकर संगीत कहा जाता है। किसी भी क्षेत्र के लोक संगीत में उस स्थान की परंपराएं, मान्यताएं, रीति रिवाज आदि मौजूद रहते हैं। लोकगीतों में विशेष क्षेत्र की बोली का प्रयोग होने के कारण प्रत्येक अंचल के लोकगीतों में विविधता दृष्टिगोचर होती है। यदि कोई व्यक्ति उस स्थान की भाषा नहीं जानता है तो वह लोकगीत में छुपी भावनाओं को नहीं समझ सकता है।

लोकगीत की विशेषताएं-

1. लोक गीत की भाषा आसानी से समझी जाती है।
2. लोक गीत में सम्बंधित क्षेत्र की बोली के शब्द होते हैं।
3. लोकगीतों की ध्वनि सर्वग्राह्य होती है।
4. लोकगीत को गाने के लिए संगीत के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है।
5. लोकगीत मुख्यत: दादरा और कहरवा ताल में बंधे हुए होते हैं जिन्हें गाने में साधारण व्यक्ति को कोई कठिनाई नहीं होती है।
6. लोकगीत जिस समाज से संबंधित होते हैं उसके रीति रिवाज तथा रहन-सहन तीज-त्यौहार का वर्णन उन गीतों में पाया जाता है।
7. भारतीय लोकगीतों में भारत वर्ष में विभिन्न समाजों की वर्ण व्यवस्था, जातिगत विशेषताओं एवं उनके कार्यों का भी वर्णन प्राप्त होता है।
8. लोकगीत मुख्यतः चार या पांच स्वरों पर ही बंधे हुए होते हैं जिनमें राग रूप को पहचानना कठिन होता है।
9. विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में हास्य-व्यंग्य पाया जाता है। बारात के समय कन्या पक्ष की महिलाएं वर पक्ष की महिलाओं और पुरुषों के ऊपर तीखे व्यंग्य करती हैं।
10. लोकगीतों में स्थानीय, क्षेत्रीय व प्रादेशिक विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं।
11. कुछ लोकगीत प्रश्न उत्तर प्रणाली में होते हैं और कुछ पुनरावृति प्रणाली के, एक महिला प्रश्न पूछती है और दूसरी उस प्रश्न का उत्तर देती है। पुनरावृति प्रणाली में पहले एक महिला एक पंक्ति गाती है और फिर सामूहिक रूप से सब महिलाएं और पुरुष उस पंक्ति को दोहराते हैं।
12. लोक संगीत में प्रयोग किए जाने वाले स्वर शब्द और ताल इतने आसान होते हैं कि एक बार सुनने पर ही याद हो जाते हैं।
13. लोकगीतों के अधिकांश अंतरे एक समान स्वर रचना पर आधारित होते हैं इसलिए सीखने में मदद मिलती है।
14. लोकसंगीत में कोई बन्धन या नियम लागू नहीं होता है। मुक्त होकर गाना, बजाना और नाचना ही लोकसंगीत की सबसे बड़ी विशेषता होती है।
15. ढोल, नगाड़ा डमरू शहनाई, रावनहत्था, हारमोनियम आदि वाद्य लोकगीतों के आरंभ में बीच बीच में या अंत में एकल भी बजाए जा सकते हैं और संगत के लिए भी बजाए जाते हैं।
16. अनेक स्थानों पर केवल वाद्य यंत्रों के वादन के साथ ही सब एकत्रित होकर नृत्य करते हैं।

17. पंजाबी ढोल वादन तो आजकल प्रत्येक उत्सव, स्वागत समारोह, बच्चे के जन्म के समय, मांगलिक अवसरों पर आदि पर प्रचार में है।

18. लोकगीतों में स्थानीय, क्षेत्रीय व प्रादेशिक तीज-त्यौहार का वर्णन पाया जाता है।

19. लोकगीतों की मौलिक प्रति नहीं है।

20. लोकगीतों में विशालकाय कथानक नहीं होते हैं ।

21. लोकगीतों में कृत्रिमता नहीं होती है तड़प-भड़क से रहित होते हैं।

22. लोक कल्याण इन गीतों का आधार होता है।

23. लोकगीतों में संबंधियों से प्रेम पूर्ण छेड़छाड़ की जाती है।

लोकगीत कभी भी विचार करके नहीं बनाए जाते अपितु गाते समय कड़ियां जुड़ जाती हैं और एक गीत बन जाता है। यही कारण है कि लोकगीत की भाषा बोलचाल की भाषा होती है न कि साहित्यिक भाषा। जिस प्रकार नदी आगे बढ़ती जाती है उसे अपने गंतव्य का पता नहीं होता जिधर रास्ता मिलता जाता है जल उसी प्रकार आगे बढ़ जाता है, उसी तरह एक लोकगीत की रचना अनायास ही होती है।

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत लोकगीतों का वर्णन किया गया है जिनमें बालक के पैदा होने, बालक को लोरी देकर सुलाने, सास ननद के झगड़े, देवर भाभी की नोक झोंक के गीत, पति के विरह में गाए जाने वाले गीत तथा फसलों की कटाई के गीत आते हैं। गांव की औरतें चक्की चलाते, चौका बर्तन करते, पानी भरते, झाड़ू करते समय तथा पुरुष सिंचाई, निराई, गुड़ाई तथा बीज रोपण करते समय कुछ न कुछ आवश्यक गुनगुनाते रहते हैं जिसके कारण उन्हें कार्य को करते हुए होने वाले परिश्रम का बोध नहीं होता है तथा हंसते-खेलते हुए पूरे दिन कार्य करते हैं।

घर में चाहे कैसा भी माहौल हो लेकिन यदि आस-पड़ोस में कहीं शुभ अवसर है तो घर के दूषित वातावरण का प्रभाव स्त्रियां पड़ोस के उस सुखी माहौल पर नहीं पड़ने देती हैं तथा उस शुभ अवसर का पूरा आनंद लेती हैं। स्त्री को अपने भावों को छुपाने की एक ईश्वरीय अनुकंपा है। उसके हृदय में पीड़ा के चाहे कितने ही सागर हिलोरे ले रहे हो किंतु वह अपने मन की व्यथा बाहर जाकर व्यक्त नहीं करती है। भारतीय जनमानस में प्राप्त लोकगीत उसके हृदय की इस व्यथा को व्यक्त करने में समर्थ हुए हैं।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पलने के कारण वह सदैव पुरुष जाति से पिछड़ी रही है और उस पर सदैव पुरुष के रूप में पिता, भाई, पति, ससुर आदि का आधिपत्य रहता है। वह अपनी इच्छा अनुसार न तो धन खर्च कर सकती है और न ही अकेले कहीं जा सकती है। उसकी यह व्यथा कहीं-कहीं उसे कचोटती भी है। गत 200 वर्षों में समाज में ऐसी व्यवस्था रही है कि पुरुषों का स्त्रियों पर अधिकार माना गया है जिससे वह अपने आप को शोषित एवं पीड़ित मानती आई है। उसे लगता है कि वह अपनी शक्ति का प्रयोग करने में समर्थ नहीं है। भारतीय लोकगीतों में स्त्री की इस दशा का विशेष रूप से वर्णन प्राप्त होता है।

यद्यपि सुख-दुख, पीड़ा, मधुरता, आलोचना और प्रशंसा ये सभी भाव लोकगीतों में अंतर निहित होते हैं किंतु परंपराएं और धार्मिक विश्वास भी लोकगीत की जड़ में निहित है। संगीत के रूप में धुन या ताल के लिए बहुत अधिक मेहनत नहीं की जाती है किंतु लोकगीत को सुनकर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह पहाड़ी लोकगीत है या बंगाली, ब्रज का लोकगीत है या अवधी। शब्दों का चयन तथा सुरों की बुनावट इस प्रकार होती है कि लोकगीत के स्थान की पहचान की

सरलता से की जा सकती है। लोकगीतों का अपना महत्व है और उनकी अपनी सुगंध है जिसे बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

एक बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक लोकगीत प्रत्येक अवसर पर प्रमुखता से गाए जाते हैं। ये लोकगीत कितने पुराने हैं? इन्हें किसने लिखा? या कब से ये प्रचार में आए हैं? कोई नहीं जानता किंतु ये प्रचलित लोकगीत वर्तमान में एक विशेष महत्व रखते हैं। इन लोकगीतों में स्थानीय तत्व भी विशेष महत्व रखता है।

माता-पिता के दुलार के साथ-साथ इन लोकगीतों में उन प्यार भरे उलाहनों का भी वर्णन होता है जो उसने बचपन से लेकर जवानी तक झेली हैं। इन लोकगीतों में प्यार और सम्मान के साथ-साथ आपसी सूझबूझ और पारिवारिक संबंधों की प्रगाढ़ता स्पष्ट दिखाई देती है। लोकगीतों के माध्यम से महिलाओं की भावनाओं को, आशाओं को, उनके भय तथा उनकी समस्याओं को भी व्यक्त किया गया है। पुत्र प्राप्ति की इच्छा तथा पुत्र की मां होने का सम्मान प्राप्त करने की इच्छा प्रत्येक महिला में होती है। ऐसे भी अनेक गीत प्राप्त होते हैं जिनमें वह लोकगीतों के माध्यम से अपनी यह इच्छा अपने पति के सामने व्यक्त कर रही है। इन गीतों में उसकी उन इच्छाओं का भी वर्णन होता है जो अभी तक भी पूरी नहीं हो पाई है इस प्रकार यदि देखा जाए तो लोकगीत मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी साधन हैं।

गांव में आपसी भाईचारा तथा मेल मिलाप इतना अधिक होता है कि प्रत्येक छोटे-छोटे अवसर पर भी गांव के सभी लोग इकट्ठे होते हैं और प्रत्येक के राय मशविरे से ही काम किए जाते हैं। लोकगीतों में यहां तक भी वर्णन है कि एक स्त्री को विवाह के बाद अपने माता-पिता से ही प्यार मिलता है तथा ससुराल तो उसके लिए कैदखाना होता है जिसमें वह बिना किसी अपराध के ही बंद कर दी जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जितनी आजादी उसे अपने माता-पिता के घर में होती है वह आजादी विवाह के पश्चात एक कैद में परिवर्तित हो जाती है जिसका दुख उस स्त्री को आजीवन रहता है और यह दुख ही इन लोकगीतों में व्यक्त होता है।

लोकगीत के प्रकार- हमारा देश कृषि प्रधान देश है और इसकी अधिकांश जनता गांव में निवास करती है। गांव की मिट्टी की सोंधी खुशबू, फसलें, नदियां, झरने, पहाड़, सूर्योदय और सूर्यास्त, चंद्रोदय और ग्रहण ये सभी सामाजिक परिवेश को प्रभावित करते हैं। जहां तक संगीत के प्रभाव का प्रश्न है मनुष्य जब प्रसन्न होता है तो वह अपने भाव गीत और नृत्य के माध्यम से व्यक्त करता है।

कृषि गीत- कृषि यानि खेती। भारत में खेती या किसानी लगभग हर प्रदेश में की जाती है। यहां तीन मुख्य फसलें उगाई जाती हैं। रबी, खरीफ तथा जायद। बीच-बीच में किसान अपनी सुविधा के अनुसार जानवरों के खाने के लिए चारा भी उगते हैं तथा कुछ किसान फूलों की खेती भी करते हैं। गेहूं, मक्का, गन्ना, आदि पंजाब की मुख्य फसलें हैं। यह माना जा सकता है कि हमारी वसुंधरा की मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि इसमें जो कुछ भी बीज बोया जाता है वह फलीभूत होता है। वर्षा ऋतु में पानी बरसने पर जब फसल बड़ी होने लगती है तब किसानो की खुशी गीतों के माध्यम से व्यक्त होती है।

कृषि गीत-

देखो पुरवा अचरवा उड़ाए लिए जाए, आई बरखा संदेसा हमें ये सुनाए।
देखो बदरा अकसवा में छाए गयो रे, आई बरखा संदेसा हमें ये सुनाए।
आई बरखा संदेसा हमें यह सुनाए, देखो पुरवा अचरवा उड़ाए लिए जाए।

1. अब की बरस हम कंगन गढ़इबे, खनके कंगन सजन को दिखइबे,
मोरा कंगना, मोरा कंगना अचरवा उड़ाए लिए जाए।
2. धरती पर बुंदिया पड़न अब लागीं, सोंधी दमकिया चहूंओर जागी,
जाए धरती का, जाय धरती का तन-मन असीस लियो रे।

कृषि गीत-

हरे हरे खेतवा, हरे हरे पतवा हो रामा हो, हो रामा हो।
चंदा की चांदनी और सूरज का धाम, झुकी झुकी झुकी झुकी, काटो खलिहान
अमवा की डार कोयलिया बोले, हो रामा हो, हो रामा हो।

वर्षा गीत-

आजा रे किसनवा, आजा रे सजनिया, खेतवा में लहरा रही, हरी-हरी धान की बालियां
बरसे खेतन मां खुशहाली, हमका मिरी गओ हमरो खजनवा।
1.अबकी बरस जब फसल बिकैहै धन-धानन ते घर भर जैहै, किसना के पाटी पढ़ाईयों
ले देहो तो को चुनरिया।
2.देश की धरती सोना उगले, हमरी मेहनत हम का फल रही है दुनिया में हमरा नाम बढ़ैहै।

सावनी-

घेरी-घेरी आई सावन की बदरिया ना, बदरिया ना, बदरिया ना।
1. पानी बरसे बड़ा जोर, जियरा नहीं लगे मोर, सैयां भेजे नहीं आवन की खबरिया ना।
2. जब से गए हैं बिदेस, नहीं भेजले संदेस, काहे रूठे मोर बड़े हो सांवरिया ना।
3. एक तो रैन अंधियारी दूजे बादरी भी कारी, तन ओट देके ठाड़ी हैं दुवरिया ना।
4. बन में बोले लगे मोर, पपीहा पापी करे शोर, मोर धड़के लगे एकले जीयरवा ना।

सावनी-

अब के सावन चुनरिया रंगाए दे ननदी।
1. चुनरी धानी रंगा दे, बिचआ घुंघरू बंधाई दे, जरी गोटा किनारी लगाय दे ननदी।
2. चुनरी लाली लाली ओढ़ हम ता जइबे नैहर, संग मा आपन बिरनवा पठाए दे ननदी।।
3. चुनरी ओढ़ी हम जइबे तो नजर लग जैहै, मै का काजल ढिठौना लगाई दे ननदी।।
4. सिंदूरा मांग भर दे के सखियां गावे कजरी, अंगना सोनवा हिंडोलना गढ़ाए दे ननदी।।

विवाह गीत- राजस्थान, गुजरात और निमाण के कुछ स्थानों में यह मालवी लोकगीत विवाह आदि के शुभ अवसर पर गाया जाता है। इस गीत में महिलाएं भगवान गणेश से यह प्रार्थना करती हैं कि विवाह भली भांति संपन्न हो तथा कन्या और वर को आप सौभाग्य तथा आशीर्वाद प्रदान करें।

निमाड़ क्षेत्र मध्य प्रदेश में है। विवाह के समय एक माता अपने पुत्री को ससुराल में रहने एवं वहां के सभी संबंधियों को अपने घर के संबंधियों के समान मानने और उनका आदर सम्मान करने की सीख देती है तथा यह भी कहती है कि अपने कुल की कीर्ति को निभाने के लिए सब की सेवा करती रहना तथा कुटुंब में सबके साथ मिलजुल कर रहना, कोई भी ऐसा कार्य न करना जिससे तुम्हारे पिता के कुल को लज्जा आए।

होली गीत-

अवध में होली खेले रघुवीरा

किसके हाथ रंग पिचकारी, किसके हाथ अबीरा।

राम जी के हाथ रंग पिचकारी, लक्ष्मण हाथ अबीरा, अवध में होली खेले रघुवीरा।

राम विवाह गीत-

तुम उठो सिया सिंगार करो, शिव-धनुष राम ने तोड़ा है,

शिव धनुष राम ने तोड़ा है, सीता से नाता जोड़ा है।

शीश सिया के चुनर सोहे, टिके की छवि न्यारी है,

हाथ सिया के चूड़ी सोहे, कंगन की छवि न्यारी है।

कमर सिया के तगड़ी सोहे, झुमके की छवि न्यारी है,

पैर सिया के पायल सोहे, बिछिया की छवि न्यारी है।

तुम उठो सिया सिंगार करो, शिव धनुष राम ने तोड़ा है।।

राम वन गमन का गीत

बन चले दोनों भाई, इन्हें समझाओ री माई ।

आगे-आगे राम चलत है, पीछे लक्ष्मण भाई, बीच में जात है मात जानकी,

यह दुख सहा ना जाई , इन्हें समझाओ री माई।।

प्राकृतिक सुषमा पर आधारित एक लोकगीत

घूँघट-घूँघट नैना नाचे, पनघट-पनघट छैया रे,

लहर-लहर हर नैया नाचे, नैया बीच खेवइया रे।

बीच गगन में छाए बदरा, बरसे मारे प्यार के,

पानी पी-पी धरती नाचे, बिना किसी आधार के ।

सूरज नाचे चंदा नाचे, नाचे सोन चिरैया रे,

लहर लहर लहर नैना नाचे नैया बीच खेवईया रे

दिन क्या बीता कुमकुम फूटा, बिखरे रंग दिशाओं में,

संध्या भी सिंदूर उड़ाती, आई मस्त हवाओं में,

उतरी रात सितारों वाली, घूंघर बांधे पैया रे ,

लहर-लहर हर नैया नाचे, नैया बीच खिवैया रे

मराठी लावणी-

एक मराठी लावणी गीत जिसमें स्त्री की अद्भुत सुंदरता का वर्णन है। कोमल काया की मोह माया जैसी पूर्णिमा की चांदनी में स्नात, स्वर्ण से सजी हुई एवं रूप की चांदी में भीगी हुई, सज धज कर मानो चांदनी ही पृथ्वी पर उतर आई हो, ऐसा लगता है मानो इंद्रपुरी से कोई अप्सरा उतर कर आ गई हो। उसका यौवन विद्युत क्रांति के समान है जिसे देखकर इंद्रदेव की सभा भी मंत्र मुग्ध हो गई है।

अप्सरा आली कोमल काया की मोह माया, पुन व चंदन न्हाली

सोन्यत सजली, रू प्यत बिजली, रत्नप्रभा तनु न्याली,

ही नटली थटली, जशी उमटली, चांदनी रंग महाली, मी यौवन बिजली, पाहुन थिजली

इंद्रसभा भवताली, अप्सरा आली, इंद्रपुरी तनु खाली,

पसरली लाली रत्न प्रभा तनु न्याली, ती हसली गाली चांदनी रंग महाली

अप्सरा आली पुन व चंदन न्हाली ।

छबि दार सुरत देखनी, जनू हिरकनी नार गुलज़ार, सांगते उमर कंचुकी,

भोपुटी मुखी सोसटे भार, शेलटी कुनावी कटी, तशी हनुवटी नयन तलवार।

ही रती मधु भरली दाजी थिनगी शिंग राची, कस्तूरी दरवाली दाजी, चूक ही वार्याची,

निष्कर्ष-

लोकगीतों के माध्यम से महिलाएं अपनी हार्दिक भावनाओं को व्यक्त करने में संकोच नहीं करती हैं जब भी उन्हें अवसर मिलता है तो अपने पति के सामने अपनी सास की शिकायत करती हैं तथा जिस चीज को प्राप्त करने की वे चाह रखती हैं उसे निसंकोच कह देती हैं। अपने प्यार में जहां वे सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं वही अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए वे अपने शरीर को आग लगाकर भस्म भी कर सकती हैं। विशेष पर्वों पर अपने पूर्वजों के द्वारा की गई कुर्बानियां और उनके द्वारा किए गए सामाजिक कल्याण के कार्यों को याद करना लोकगीतों के माध्यम से स्त्रियां अभिव्यक्त करती हैं। पुराने लोकगीतों की कहानियों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दैनिक कार्यों, पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों तथा आर्थिक समस्याओं के चलते स्त्रियां सदैव दुविधाग्रस्त रहती थीं। वे अपनी सुप्त भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न अवसरों पर बोलियों और गीतों के माध्यम से इन मानसिक अवस्थाओं को व्यक्त करती थीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. एन एनालिसिस ऑफ़ रिटोरिकल एक्सप्रेशंस इन पंजाबी फोक सॉन्ग्स, जहूर हुसैन और मुहम्मद आसिफ आई. एस. एस. एन. 2312-9832 अप्लाइड साइंसेज एंड बिजनेस इकोनॉमिक्स वॉल्यूम 1, इश्यू 2, 29-37, 2014

2. इश्यूज एंड कल्चरल आइडेंटिटी ऑफ फोक सॉंग इन डिजिटल प्लेटफार्म: ए क्रिटिकल एनालिसिस, डॉ. राजेश दास, इप्सिता बैनर्जी, आई एस एस एन नंबर 2320- 2882 , वॉल्यूम 10, इश्यू 10, फरवरी - 2022

3. किनशिप इन फोकलोर : ए स्टडी ऑफ सिलेक्टेड पंजाबी सॉन्ग्स, अंकिता सेठी आई एस एस एन 2456-4370 ए. डी. आर. जर्नल्स 2017, दिल्ली विश्व विद्यालय

4. पंजाब का लोक संगीत, डॉ अरविंद शर्मा, सन 2011, आई. एस. बी. एन. - 9788174533890

5. भारतीय लोक संगीत की गौरवशाली समृद्ध संगीत परंपरा- मैथिल लोकगीत, किरण कुमारी, आई एस एस एन नंबर 2394 - 5869, आई जे ए आर 2019, 5 (6) 473- 474

6. भारतीय हिंदी लोक साहित्य में संस्कृति और साहित्य का संक्षिप्त मूल्यांकन, गोदावरी, डॉ. ममता सिंह,इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजूकेशन एंड साइंस रिसर्च, वॉल्यूम 2 इश्यू 2, अप्रैल- 2015 आईएसएसएन नंबर 2349-1817

7. मेकिंग मीनिंग ऑफ़ पंजाबी फोक सोंग्स इन हिंदी सिनेमा ए जेंडर पर्सपेक्टिव, अनीता चहल, प्रमाण रिसर्च जनरल आईएसएसएन नंबर 2249-2976, वॉल्यूम 8 इ श्यू 9, 2018

8. हरियाणा और पंजाब का लोक संगीत तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. मुकेश, आई.एस.बी.एन. - 978-93-88107-68-6